nwda.gov.in

जलवायु परिवर्तन ने बदली बादलों की प्रकृति, बदला वर्षा का पैटर्न

संजीव गुप्ता • जागरण

- स्काईमेट वेदर के मुताबिक 25 वर्ष पहले बनते थे अल्टो स्ट्रेटस बादल, अब बन रहे थंडर क्लाउड
- पहले के बादलों में होती थी एकरूपता,कई दिन होती थी वर्षा, अब कहीं गरजते तो कहीं बरसते

वर्षा के दौरान खुद को बचाकर जाते दोपहिया चालक • हरीश कुमार

नई दिल्ली: वैश्विक तापमान में वृद्धि और जलवायु परिवर्तन के असर से बादलों की प्रकृति भी पहले जैसी नहीं रही है। खासकर पिछले 25 वर्षों के दौरान बादलों के गरजने, छाने और बदलने का स्वरूप बहुत हद तक बदल गया है। इससे भूजल का स्तर, खेतीबाड़ी और सुहाने मौसम का अनुभव यानी सभी कुछ बड़े पैमाने पर प्रभावित हुआ है।

स्काईमेट वेदर के अनुसार तकरीबन 25 वर्ष पहले जो बादल बनते थे, वो अल्टो स्ट्रेटस होते थे। इनमें अपेक्षाकृत एकरूपता होती थी और वो रुक रुककर पूरी दिल्ली में बरसते थे। वर्षा भी कई-कई दिनों तक चलती रहती थी, लेकिन अब थंडर क्लाउड बनने लगे हैं। इसमें समानता नहीं होती। इनमें पानी सोखने की क्षमता भी काफी कम होती है। इसीलिए ऐसे बादल एकाएक छाते हैं, गरजते हैं और फिर कुछ ही घंटों में बरस भी जाते हैं। कई दिन की वर्षा भी एक साथ कर देते हैं। हैरत की बात यह कि कुछ इलाकों में अत्यधिक वर्षा हो जाती है तो कुछ में सामान्य वर्षा का आंकड़ा भी पूरा नहीं हो पाता। विशेषज्ञों के अनुसार बादलों की प्रकृति बदलने और वर्षा का पैटर्न भी पहले जैसा नहीं रहने से मानसून सीजन का एहसास और नफा-नुकसान भी बदला है। अब इस सीजन में भी सुहाना मौसम कम, जबकि उमस ज्यादा रहती है। दिनों की वर्षा घंटों में होने से ना भूजल रिचार्ज हो पाता है और न खेतीबाड़ी में सिंचाई के ही काम आ पाता है।

अल्टो स्ट्रेटस बादल और थंडर क्लाउड में अंतर: अल्टो स्ट्रेटस बादल शांत, स्थिर मौसम में फैले हुए व परतदार बादल होते हैं। वहीं थंडर क्लाउड गरज, बिजली और भारी वर्षा के साथ शक्तिशाली और ऊर्ध्वाधर बादल होते हैं।

25 साल पहले वर्षा के पैटर्न में ज्यादा एकरूपता थी। सिंधु-गंगा के मैदानी क्षेत्र में ज्यादा वर्षा होती थी, जबकि राजस्थान और गुजरात सूखे रहते थे। पहले रिमझिम वर्षा तीन से चार दिन तक लगातार होती थी, लेकिन धीमी गति से और देर तक बरसने वाले अल्टो स्ट्रेटस बादल बनना कम हो गए हैं। अब थंडर क्लाउड अधिक बनते हैं, जो एक बार में बहुत ज्यादा वर्षा देते हैं। पहले जो वर्षा तीन-चार दिन में होती थी, वह अब तीन-चार घंटे में होती है।- **महेश पलावत, उपाध्यक्ष (मौसम विज्ञान एवं जलवायु परिवर्तन), स्काईमेट वेदर**